● सुनो, समझो और सुनाओ :

६. हँसिकाएँ

– डॉ. सरोजनी प्रीतम

जन्म : ६ सितंबर १९३९ **रचनाएँ :** पंखोंवाला फूल, मूरखचंद, मेरी प्रतिनिधि हँसिकाएँ, चूहे और आदमी में फर्क, लाइन पर लाइन, आखिरी स्वयंवर **परिचय :** सरोजनी प्रीतम आधुनिक हिंदी साहित्य की सुपरिचित महिला साहित्यकार और कवयित्री हैं ।

प्रस्तुत क्षणिकाओं में हास्य-व्यंग्य के माध्यम से कवयित्री ने समाज की विसंगतियों को चित्रित किया है ।

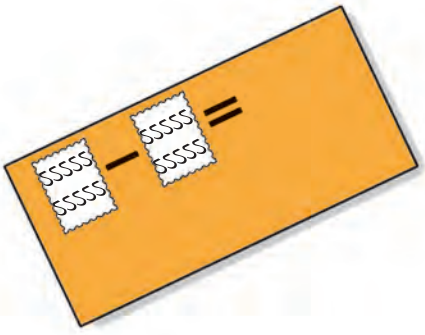

* फल

आज की पीढ़ी कितनी तेज है !
सब्र का फल मीठा
लेकिन उन्हें मीठे से परहेज है ।

* समस्या का निदान

दस रुपये और तीन रुपये के
डाक टिकट लाए
दुविधा में थे-सात रुपये का
टिकट कैसे लगाएँ ?
नन्हे ने देखा तो -
नन्हे का था कहना
'दस और तीन की दो
टिकटें लगाकर
बीच में ऋण का चिह्न
लगा देना ।'

* दर्पण

साहित्यकार पति ने कहा,
''साहित्य को सब अर्पण है ।''
'दर्पण' सुनकर वे बोलीं,
''ठीक है, इससे ज्यादा सिर मत फोड़ना
और एकाध दर्पण
मुँह देखने के लिए भी रख छोड़ना ।''

* बीमा

सुनो जी, खुश हो जाओ ।
मेरा तो दो लाख का बीमा हो गया
तो गुस्से से अनपढ़ पत्नी बोली
खुशी तो उस दिन होगी
जिस दिन ये रकम जल्दी मिले,
इसके लिए करना क्या पड़ता है ?
वो बोले- पहले मरना ही पड़ता है ।

❑ उचित आरोह-अवरोह, हाव-भाव के साथ हँसिकाएँ विद्यार्थियों को सुनाएँ । एकल एवं गुट में इन कविताओं को अभिनय के साथ सुनाने के लिए कहें । विद्यार्थियों को सुने हुए अन्य हास्य गीत, पढ़ी हुई हास्य कविता या चुटकुले सुनाने के लिए प्रेरित करें ।